RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(4):14-16
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i04.004
Research Paper
Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

जनसंचार में हिन्दी भाषा

*डॉ. आकांक्षा जैन

सहा. प्राध्यापक, भाषा विभाग, प.म.ब. गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, नसिया रोड, इंदौर, म.प्र. पिनकोड– 452001

ABSTRACT

आज वैश्वीकरण के दौर में संचार माध्यमों की व्यापकता उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है। चूँकि संचार के क्षेत्र में भाषा मुख्य रूप से सहभागी होती है। बिना भाषा के जनसंचार की परिकल्पना ही संभव नहीं है।

सृष्टि के आरंभ से आज तक जनसंचार के साथ–साथ संचार साधनों माध्यमों का अनवरत् विकास होता जा रहा है। चूँकि संचार साधनों में हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु हिन्दी में परिभाषिक शब्दों का आवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और उससे कहीं अधिक आवश्यक और उपर्युक्त भी।

Keywords: *जनसंचार , भाषा, वैज्ञानिक, सामाजिक, श्रोता*

Article Publication

Published Online: 15-Apr-2021

***Author's Correspondence**

डॉ. आकांक्षा जैन

सहा. प्राध्यापक, भाषा विभाग, प.म.ब. गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, नसिया रोड, इंदौर, म.प्र. पिनकोड– 452001

✉ mrsakanksha[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

भाषा के विकास का जनसंचार माध्यमों के विकास में गहरा योगदान है। संचार का अर्थ है एक–दूसरे को जानना, संबंधित सूचनाओं का आदान–प्रदान करना, बातचीत या वार्तालाप करना होता है। संचार प्रणाली अत्यंत विकसित एवं वैज्ञानिक है।

संचार के माध्यम से मनुष्य के सामाजिक बंधन बनते है और विकसित होते है। समाज के संचालन की समस्त प्रक्रिया संचार पर आधारित होती है। संचार मनुष्य के अलावा सभी प्राणियों में होता है। इसके लिए माध्यम होना आवश्यक है। **भाषा ही संचार का माध्यम है।** भाषा के माध्यम से ही एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक समूह को दूसरे समूह से और एक देश को दूसरे देश से जोड़ा जा सकता है। इसीलिए सूचनाओं एवं भावनाओं को एक–दूसरे तक सम्प्रेषित करने की कला का नाम संचार है।

संचार माध्यम का प्रभाव समाज में अनादिकाल से ही रहा है। परम्परागत एवं आधुनिक संचार माध्यम समाज की विकास प्रक्रिया से जुड़े हुए है। संचार माध्यम का श्रोता अथवा लक्ष्य समूह बिखरा होता है। फिर संचार माध्यम ही संचार प्रक्रिया के अंजाम तक पहुँचते है।

जनसंचार, जनसम्पर्क या **लोक सम्पर्क** से तात्पर्य उन सभी साधनों के अध्ययन एवं विश्लेषण से है जो एक साथ बहुत बड़ी जनसंख्या के साथ संबंध स्थापित करने में सहायक होते है। प्रायः इसका अर्थ सम्मिलित रूप से समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो,

दूरदर्शन चलचित्र से लिया जाता है जो समाचार एवं विज्ञापन दोनों के प्रसारण के लिए प्रयुक्त होते है। जनसंचार माध्यम में **'संचार'** शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के **'चर'** धातु से हुई है जिसका अर्थ है चलना।

संचार के सभी माध्यमों में हिन्दी ने मजबूत पकड़ बना ली है। चाहे वह हिन्दी समाचार–पत्र हो, रेडियो हो, दूरदर्शन हो, हिन्दी सिनेमा हो, विज्ञापन हो या ओटीटी हो सर्वत्र हिन्दी छायी हुई है। वर्तमान समय में हिन्दी को वैश्विक संदर्भ प्रदान करने में उसके बोलने वालों की संख्या, हिन्दी फिल्में, पत्र–पत्रिकाएँ, विभिन्न हिन्दी चैनल, विज्ञापन एजेन्सियाँ, हिन्दी का विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकार आदि का विशेष योगदान है। इसके अतिरिक्त हिन्दी को विश्व भाषा बनाने में इंटरनेट की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज हिन्दी अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम बन गई है। हिन्दी चैनलों की संख्या लागातार बढ़ रही है। बाजार की स्पर्धा के कारण ही सही, अंग्रेजों चैनलों का हिन्दी रूपान्तरण हो रहा है। इस समय हिन्दी में भी एक लाख से ज्यादा लोग सक्रिय हैं। अब सैकड़ों पत्र–पत्रिकाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध है।

हिन्दी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है। संचार माध्यमों ने हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है। **भाषाएँ संस्कृति की वाहक होती है।** और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के बदलते सच को हिन्दी के बहाने ही उजागर किया गया है।

डिजिटल दुनिया में हिन्दी की माँग अंग्रेजी की तुलना में 5 गुना ज्यादा तेज है। अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी 5 गुना तेजी से बढ़ रही है। भारत में हर पाँचवां इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिन्दी का उपयोग करता है। देश में जहाँ हिन्दी सामग्री की डिजिटल मीडिया में खपत 94 फीसद की दर से बढ़ है, वहीं अंग्रेजी सामग्री को खपत केवल 19 फीसद की दर से ही बढ़ी है।

आज स्मार्टफोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें हिन्दी। सभी ऑपरेटिंग सिस्टमों में हिन्दी में संदेश भेजना, हिन्दी की सामग्री पढ़ना, सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान है जितनी अंग्रेजी की सामग्री को। हालाँकि कम्प्यूटरों पर भी हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है और इंटरनेट पर भी। लेकिन मोबाइल ने हिन्दी के प्रयोग को अचानक जो गति दे दी है, उसकी कल्पना अभी 5 साल पहले तक नहीं की थी। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की सामग्री की वृद्धि पर प्रभावशाली है। अंग्रेजी के 19 फीसद सालाना के मुकाबले भारतीय भाषाओं की सामग्री 90 फीसद की रफ्तार से बढ़ रही है।

दूसरी ओर भारतीयों में हिन्दी के प्रति रूझान बढ़ा है। भारत में 50 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी बोलते है। जबकि करीब 21 प्रतिशत भारतीय हिन्दी में इंटरनेट का प्रयोग करना चाहते हैं। भारतीय युवाओं के स्मार्टफोन में औसतन 32 एप होते हैं, जिसमें 8 से 9 हिन्दी के होते हैं। भारतीय युवा युट्यूब पर 93 फीसद हिन्दी वीडियो देखते हैं। हिन्दी मीडिया के घटक है – हिन्दी फिल्में, हिन्दी रेडियो, हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ, हिन्दी टेलीविजन, हिन्दी साइबर मीडिया।

जनसंचार माध्यमों के हिन्दी के प्रयोग के कारण मौखिक क्षेत्र के अंतर्गत मौखिक संचार संकेतों की सहायता से भावाभिव्यक्ति हो तो वह संचार की सूक्ष्म स्थिति तथा जब भाषा का प्रयोग हो तो वह संचार की स्थूल स्थिति होती है। सभा, सम्मेलन, गोष्ठी, शिक्षण, भजन, प्रवचन, खेलकूद, ह्मस–परिहास मनोरंजन आदि के मौखिक अभिव्यक्ति होती है। संचार का यह सहज प्रभावकारी माध्यम है। मौखिक संचार की विधाओं में बातचीत, कथोपकधन, वार्ता, वार्तालाप, भाषण, प्रवचन, वाद–विवाद, परिसंवाद आदि प्रमुख है। दृश्य क्षेत्र के अंतर्गत चित्र, चलचित्र और भित्तिचित्र आते है। जनसंचार में फोटोग्राफी का महत्वपूर्ण स्थान है। **फोटोग्राफी को सदैव 'सार्वभौमिक भाषा' बोलते है।** इसका प्रभाव तुरन्त पड़ता है क्योंकि इसे यथार्थ सत्य माना जाता है। इसमें विश्वसनीयता होती है। इसमें समाचार, विचार, रिपोतार्ज, लेख, दस्तावेज और सम्पादकीय सभी कुछ है। चलचित्र में विज्ञान की शक्ति है। यह जनजागरण और जनसंचार का सशक्त माध्यम है इसका प्रभाव अमिट है। जनसंचार का ठोस माध्यम भाषा है।

जनसंचार माध्यम में श्रव्य माध्यम है रेडियो, पत्रकारिता की दृष्टि से इसे श्रव्य समाचार–पत्र कह सकते है। यह माध्यम श्रवणेन्द्रियों के जरिये सारी दुनियां को श्रोता के निकट लाता है। यह सर्वाधित प्रचलित लोकप्रिय जनसंचार माध्यम है। इसके बाद श्रव्य–दृश्य में फिल्म, टीवी की गणना होती है। विडियो इसी श्रेणी में आता है। फिल्म और टेलीविजन लोकप्रियता सबसे अधिक है।

अब कम्प्यूटर ने भी फिल्म और टीवी के साथ अपना प्रगाढ़ प्रबंध बना लिया है। हिन्दी अब और भी अधिक समृद्ध हो गई हैं इसे और अधिक समृद्ध बनाने का प्रयास जनसंचार माध्यमों द्वारा हो रहा है।

विज्ञापन, व्यापार की आत्मा है। आज जिस सूचना क्रांति की बात होती है उसके पीछे विज्ञापन का बड़ा हाथ है। सूचना प्रौद्योगिकी ने समाज में जो परिवर्तन किए है वे विज्ञापन के द्वारा ही संभव हुए है। विज्ञापनों में हिन्दी और गत्यात्मक सामग्री का समावेश होता है। विज्ञापनों में हिन्दी **'हिंग्लिश'** का ही रूप है। लेकिन फिर भी हिन्दी आज विज्ञापन जगत पर छाई हुई है। यह इनती लचीली है कि सारे दबावों को अपनाती हुई प्रयोक्ताओं पर खरी उतर रही है। क्योंकि विज्ञापन की भाषा आवश्यकतानुसार मनोरंजन पूर्ण, रोचक, चमत्कारित, विश्वसनीय एवं तर्कपूर्ण, आकर्षक, कर्णप्रिय, गत्यात्मक सामग्री का समावेश होती है।

आधुनिक जनसंचार माध्यमों के उपयोग से हिन्दी भाषा को वैश्विक रूप प्रदान हुआ है। आज समूचे विश्व में जनसंचार माध्यमों का प्रयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है। हिन्दी भाषा पिछले दशक में भाषाई तौर पर नहीं, बल्कि एक बड़ी शक्ति के तौर पर सम्पूर्ण विश्व में उभरी है। इसका पूरा श्रेय जाता है दृश्य–श्रव्य माध्यमों की। इन माध्यमों के अंतर्गत आने वाले विभिन्न चैनलों ने हिन्दी भाषा को विश्व स्तर की एक महत्वपूर्ण और विशाल भाषा के रूप में स्थापित किया। हिन्दी भाषा आज जिस प्रकार समूचे विश्व में फली–फूली है इसका पूरा योगदान जनसंचार माध्यमों को ही जाता है।

सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग ने सूचना के आदान–प्रदान को नवीनता और अत्याधिक गति प्रदान की है। जनसंचार जगत लगातार उत्तरोत्तर विकास एवं प्रगति की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज इस यांत्रिक संचार क्रांति ने रोजगार, शिक्षा तथा दैनिक जीवन में अभूतपूर्व क्रांति कर विश्व में कीर्तिमान स्थापित हुए है। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का पहला अवसर हिन्दी पोर्टल **'वेबदुनिया'** को मिला। इंटरनेट का परिदृश्य हिन्दी भाषा, भाषा समाज के लिए उज्जवल है। जनसंचार माध्यम अर्थात् मीडिया पूरी दुनिया पर हावी होकर जनमानस के दिलों पर राज कर रहा है। जनसंचार माध्यमों के अंतर्गत सूचना और प्रौद्योगिकी के अविष्कारों ने मावन–जीवन को प्रभावित किया है। सूचना और प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव वैश्वीकरण की प्रक्रिया पर पड़ा है। सूचना और प्रौद्योगिकी के कारण जनसंचार के विविध विकल्प आज बाजार में उपलब्ध है।

हिन्दी भाषा को वैश्विक दायरा प्रदान करने में आधुनिक जनसंचार माध्यमों का बहुत बड़ा योगदान रहा है, ठीक वैसे ही पारम्परिक जनसंचार माध्यमों का भी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दी को वैश्विक रूप प्रदान करने में लगा है। पारम्परिक जनसंचार माध्यमों में शास्त्रीय संगीत, नृत्य, लोकगीत, लोक साहित्य, कठपुतली, लोकनाट्य, रासलीला, स्वांग, लोक कला, मीडिया मिक्स आदि के प्रति विदेशों में आकर्षण रहा है। इन माध्यमों की सहायता से हिन्दी भाषा विश्व में पहुँची है। जैसे – पंडित रविशंकरजी ने शास्त्रीय संगीत (सितार वादन) के साथ हिन्दी भाषा के विदेश पहुँचाया। उनके बड़े भाई उदयशंकर जी शास्त्रीय नृत्य के साथ विदेश के ख्याति पाई। ऐसे अनेक उदाहरण दे सकते हैं जिनके कारण पारम्परिक जनसंचार माध्यमों द्वारा भारतीय भाषा, कला, संस्कृति विदेशों में पहुँची है। अतः यह कहना उचित होगा कि पारम्परिक और आधुनिक जनसंचार माध्यमों के कारण ही हिन्दी भाषा 'विश्व भाषा' के रूप में प्रतिष्ठा पाने की ओर अग्रसर है।

संदर्भ सूची :

1. आधुनिक जनसंचार माध्यमों में हिन्दी – डॉ. जयप्रकाश पांडये (59)
2. जनसंचार माध्यमों में हिन्दी – चन्द्रकुमार (32)
3. इंटरनेटस – विकीपीडिया (जनसंचार और हिन्दी भाषा)
4. संचार माध्यमों का प्रभाव – ओमप्रकाश
5. आधुनिक जनसंचार और हिन्दी – प्रो. हरिमोहन